Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

1KI

1 राजाओं 1:1–4:34, 1 राजाओं 5:1–8:66, 1 राजाओं 9:1–9, 1 राजाओं 9:10–11:43, 1 राजाओं 12:1–14:31, 1 राजाओं 15:1–22:53

1 राजाओं 1:1–4:34

1 राजाओं की पुस्तक, 1 शमूएल और 2 शमूएल में दर्ज इस्राएल की कहानी को आगे बढ़ाता है।

दाऊद ने वादा किया था कि सुलैमान उसके बाद राजा होगा। फिर भी दाऊद ने अगले राजा को नियुक्त करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया था। न ही उसने अपने पुत्रों का मार्गदर्शन और सुधार किया।

अदोनिय्याह ने स्वयं को राजा बना लिया जैसे अबशालोम ने एक बार किया था। इससे इस्राएल में बहुत भ्रम उत्पन्न हुआ।

नातान और बतशेबा ने दाऊद को यह समझाया कि वे सुलैमान को राजा बना दें, इससे पहले कि दाऊद की मृत्यु हो। दाऊद के अंतिम शब्द सुलैमान के लिए उन लोगों के बारे में थे जिन्होंने उनका समर्थन किया था या उनका विरोध किया था। सुलैमान ने दाऊद के निर्देशों का पालन किया कि उसे कैसे व्यवहार करना चाहिए। इसमें उन लोगों को मारना भी शामिल था जिन्होंने सुलैमान के राजा के रूप में अधिकार को चुनौती दी थी।

दाऊद के अंतिम शब्द भी इस बारे में थे कि सुलैमान को उस तरह से जीना चाहिए जैसा परमेश्वर उससे चाहते थे। दाऊद के बाद के राजाओं को पूरे हृदय से परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना था। यह दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा का हिस्सा था।

जब सुलैमान ने बुद्धि मांगी, तो परमेश्वर ने उन्हें किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक बुद्धि दी। इस्राएली यह समझ गए कि सुलैमान कितना बुद्धिमान था। सुलैमान की बुद्धि उन निर्णयों में स्पष्ट थी जो उसने कठिन मामलों में न्यायी के रूप में किए।

सुलैमान की सरकार का नियंत्रण उन लोगों के समूहों पर था जो इस्राएल के चारों ओर रहते थे। इन राष्ट्रों के लोगों ने यह भी पहचाना कि सुलैमान कितना बुद्धिमान था। वे उससे सुनने के लिए आते थे।

इस्राएली शांति और विश्राम में रहते थे। उनके पास हर चीज थी जिसकी उन्हें ज़रूरत थी और उनके शत्रुओं द्वारा उनके साथ बुरा व्यवहार नहीं किया जाता था। ये कुछ वाचा की आशीषें थी।

इस्राएलियों को सुलैमान के शासन का समर्थन करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी। स्थानीय अधिपति हर महीने राजा द्वारा उपयोग किए जाने वाले सभी भोजन और आपूर्ति प्रदान करते थे। शमूएल ने इस्राएलियों को चेतावनी दी थी कि राजा चुनने का यह परिणाम होगा। (1 शमूएल 8:11–18)।

1 राजाओं 5:1–8:66

सुलैमान ने यरूशलेम में परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनवाया। उसने सोर के राजा द्वारा सहमति से दी गई सामग्री का उपयोग किया। उसने पीतल से बनी हर चीज के लिए सोर के एक कुशल कारीगर का उपयोग किया।

हजारों पुरुषों को मन्दिर के लिए लकड़ी और पत्थर तैयार करने के लिए मजबूर किया गया। मन्दिर को पूरा होने में सात वर्ष लगे। मन्दिर झोपड़ियों के पर्व के समय उपयोग के लिए तैयार था। सभी इस्राएली इकट्ठा हुए जब उन्होंने बलिदान चढ़ाए, प्रार्थना की और 14 दिनों तक खुशी से पर्व मनाया।

परमेश्वर ने इस्राएलियों से उनके लिए एक मन्दिर बनाने के लिए नहीं कहा था। दाऊद और सुलैमान इसे बनाना चाहते थे। परमेश्वर ने उनकी इच्छा को स्वीकार किया और मन्दिर का उपयोग वैसे ही किया जैसे उन्होंने पवित्र तम्बू का किया था। यह वह स्थान बन गया जहां परमेश्वर इस्राएल में उपस्थित थे। परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को एक बादल भेजकर दर्ज कराई जिसने मन्दिर को महिमा से भर दिया। बादल परमेश्वर की महिमा का चिन्ह था।

परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह था कि उसके लोग उसका अनुसरण करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। परमेश्वर ने सुलैमान को एक संदेश में इसकी याद दिलाई। राजा को सीनै पर्वत की वाचा के प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य होने का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। वाचा के सन्दूक में पत्थर की तख्तियाँ इस वाचा का प्रमाण थीं।

सुलैमान की आशीषें और प्रार्थनाएँ कुछ दिखाती थीं। सुलैमान समझ गया कि वह और लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य

रहने के लिए ज़िम्मेदार थे। ऐसा करने से अन्य जातियों को यह एहसास होगा कि इस्राएल के परमेश्वर ही सच्चे परमेश्वर है। सुलैमान ने यह भी समझा कि परमेश्वर को रहने के लिए मन्दिर की आवश्यकता नहीं थी। मनुष्यों द्वारा बनाया गया भवन परमेश्वर को नहीं समा सकता। लेकिन मन्दिर परमेश्वर के लोगों को यह याद दिलाने में मदद करेगा कि परमेश्वर उनके साथ थे। वे वहां जाकर प्रार्थना कर सकते थे। या फिर वे प्रार्थना करने के लिए अपने शरीर को मंदिर की ओर मोड़ सकते हैं। वे ऐसा तब भी कर सकते थे जब वे यरूशलेम से दूर होते। इससे उन्हें प्रार्थना करने और परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगने में मदद मिलती। इससे उन्हें विश्वास होता कि परमेश्वर ने उनकी सुनी और उनकी सहायता के लिए कार्रवाई की। यह इस्राएलियों के लिए और उन बाहरी लोगों के लिए भी सत्य था जो परमेश्वर की आराधना करते थे।

1 राजाओं 9:1–9

परमेश्वर ने सुलैमान से वह वाचा दोहराई जो उन्होंने दाऊद से की थी। उन्होंने सुलैमान से कहा कि वे उनके साथ उसी तरह विश्वासयोग्यता के साथ चलें जैसे दाऊद ने किया था। इसका अर्थ है कि किसी को परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए और जब तक वे जीवित हैं, उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

दाऊद ने मूसा की व्यवस्था का पूरी तरह पालन नहीं किया था। उसने कुछ ऐसे कार्य किए जो परमेश्वर को अप्रिय थे। ये घटनाएँ 2 शमूएल में दर्ज हैं। लेकिन उसने हमेशा अपने पापों से मुंह मोड़ा, पश्चाताप किया और परमेश्वर पर विश्वास किया कि वह उसे क्षमा करेगा।

उसने हमेशा केवल परमेश्वर की आराधना की और कभी झूठे देवताओं की आराधना नहीं की। दाऊद के वंशज उन तरीकों में दाऊद के समान होने चाहिए थे।

यदि वे नहीं होते तो वाचा के श्राप सभी इस्राएलियों पर आते। इसमें सीनै पर्वत की वाचा के श्राप और मन्दिर का नष्ट होना शामिल था।

लोगों और राजा दोनों को परमेश्वर की आज्ञा माननी थी और केवल उन्हीं की उपासना करनी थी। तभी वे अपने शत्रुओं से सुरक्षित रह सकते थे और वाचा की आशीषों को प्राप्त कर सकते थे।

1 राजाओं 9:10–11:43

सुलैमान ने इस्राएल को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए कई कार्य किए। उसने कई नगर और महल बनवाए। उसने इस्राएल के आसपास के राजाओं, रानियों और समूहों के साथ समझौते किए। उसने अपनी सेना को बड़ा और मजबूत बनाया। कई राष्ट्रों के लोग उससे प्रभावित हुए। शेबा की रानी

ने उन तरीकों के लिए यहोवा की स्तुति की, जिनसे परमेश्वर ने सुलैमान के द्वारा इस्राएल को आशीष दी थी।

सुलैमान ने यह सब कुछ कई तरीकों से पूरा किया। उसने इस्राएलियों को अपने लिए काम करने के लिए कहा और कनानियों को अपना दास बना लिया। उसने युद्धों में उपयोग के लिए कई घोड़े और रथ भी प्राप्त किए। इससे उनकी सेना बहुत शक्तिशाली हो गई। और उसने अन्यजातियों की महिलाओं से विवाह किया। उसके समय में शासकों के लिए यह एक सामान्य प्रथा थी। यह उन लोगों के अगुवों के बीच समझौते करने का एक तरीका था। ये समझौते व्यापार, लेन-देन और एक-दूसरे पर हमला न करने के बारे में होते थे।

सुलैमान एक बहुत शक्तिशाली राजा था क्योंकि उसके पास बहुत से कारीगर, घोड़े और पत्नियाँ थीं। लेकिन ये चीजें इस्राएल में राजाओं के लिए परमेश्वर के नियमों के विरुद्ध थीं (व्यवस्थाविवरण 17:14–20)। इन बातों ने सुलैमान को दुष्ट काम करने के लिये प्रेरित किया। उसने केवल परमेश्वर की उपासना नहीं की। वह सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहा। इस कारण, परमेश्वर ने शत्रुओं को इस्राएल पर आक्रमण करने की अनुमति दी। और दाऊद के परिवार की वंशावली को अब 12 गोत्रों पर शासन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

यारोबाम को अहिय्याह नबी ने दस गोत्रों का राजा बनने के लिए अभिषिक्त किया। जब सुलैमान ने यह सुना, तो उसने अपने पापों से मुंह नहीं मोड़ा और पश्चाताप नहीं किया। इसके बजाय, उसने वैसा ही व्यवहार किया जैसे शाऊल ने किया था। सुलैमान ने यारोबाम को मारने की कोशिश की, जैसे शाऊल ने दाऊद को मारने की कोशिश की थी।

1 राजाओं 12:1–14:31

रहबाम की कहानी बताती है कि कैसे 12 गोत्र दो राष्ट्रों में विभाजित हो गए। रहबाम ने प्रधान बनने के बारे में बुद्धिमानी भरी सलाह नहीं मानी। वह परमेश्वर के लोगों की सेवा करना या उनकी देखभाल नहीं करना चाहता था। उसने वह नहीं किया जो उचित और सही था, जैसे दाऊद ने किया था। इसलिए दस गोत्रों ने उसका अनुसरण करना बंद कर दिया। वे उत्तरी राज्य बन गए और उन्हें इस्राएल कहा गया।

फिर भी परमेश्वर दाऊद के साथ अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहे। उन्होंने दाऊद के परिवार की वंशावली को शासन करने की अनुमति दी। रहबाम यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों पर राजा था। वे दक्षिणी राज्य बन गए और यहूदा कहलाए। रहबाम के अधीन दक्षिणी राज्य शक्तिशाली नहीं था और उनके पास शांति और विश्राम नहीं थे।

यारोबाम उत्तरी राज्य का राजा था। परमेश्वर ने यारोबाम से वैसे ही वादे किए थे जैसे उन्होंने दाऊद से किए थे। यारोबाम

को दाऊद की तरह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना था। लेकिन यारोबाम ने परमेश्वर के वचनों पर विश्वास नहीं किया। उसने सोचा कि यदि इस्राएली यरूशलेम में परमेश्वर की आराधना करते रहे, तो वे अपनी शक्ति खो देंगे। यारोबाम ने बेतेल और दान में सोने की मूर्तियाँ रखीं और कहा कि वे ही सच्चे ईश्वर हैं। लोग उनकी उपासना करने लगे। यह वैसा ही था जैसा जब इस्राएलियों ने उस धातु के बछड़े की उपासना की थी जिसे हारून ने बनाया था।

यहूदा के एक व्यक्ति ने यारोबाम और उसकी उपासना प्रथाओं के विरुद्ध परमेश्वर का संदेश सुनाया। यारोबाम ने अपने पाप से पश्चाताप नहीं किया और जब उसने संदेश सुना तो परमेश्वर की ओर नहीं लौटा। यहां तक कि जब परमेश्वर ने उसका हाथ चंगा किया, तब भी उसने बुराई के मार्ग पर चलना नहीं छोड़ा। बाद में अहिय्याह ने यारोबाम और उत्तरी राज्य के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय की भविष्यवाणी की।

1 राजाओं 15:1–22:53

दक्षिणी राज्य के सभी राजाओं की तुलना दाऊद से की जाती थी। अबिय्याम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन वैसे नहीं किया जैसा दाऊद ने किया था। लेकिन आसा और यहोशापात ने किया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि लोग केवल परमेश्वर की ही आराधना करें।

उत्तरी राज्य के सभी राजा यारोबाम से तुलना किए गए थे। नादाब, बाशा, एला, जिम्री, ओम्री, अहाब और अहज्याह ने झूठे देवताओं की पूजा की जैसे यारोबाम ने की थी। अहाब ने यारोबाम से भी अधिक बुरे काम किए। अहाब ने अराम के राजा के साथ शांति संधि की। फिर भी परमेश्वर ने आदेश दिया था कि इस राजा को अलग किया जाए ताकि उसका नाश हो सके।

अहाब और ईजेबेल ने नाबोत की हत्या करवा दी और फिर नाबोत की भूमि चुरा ली। ईजेबेल ने उन कई नबियों को भी मार डाला जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे। फिर भी परमेश्वर ने अहाब को नबियों के माध्यम से संदेश भेजना जारी रखा। बार-बार परमेश्वर ने अहाब को दिखाया कि प्रभु ही एकमात्र परमेश्वर हैं। परमेश्वर ने यह तब दिखाया जब उन्होंने कर्मेल पर्वत पर वेदी पर आग भेजी। उन्होंने यह तब दिखाया जब उन्होंने अहाब की सेना को अराम की सेना पर विजय दिलाई। लेकिन उन घटनाओं के बाद अहाब परमेश्वर की ओर नहीं लौटा। उसने केवल तब अपने आप को परमेश्वर के सामने विनम्र किया जब एलिय्याह ने उसके खिलाफ परमेश्वर का न्याय घोषित किया।

परमेश्वर ने कई वर्षों तक अहाब और ईजेबेल से एलियाह की रक्षा की। परमेश्वर ने एलिय्याह को भोजन प्रदान करने के लिए कौवों, एक विधवा और एक स्वर्गदूत का उपयोग किया। परमेश्वर ने एलिय्याह की प्रार्थनाओं का उत्तर चमत्कारों के द्वारा दिया। परमेश्वर ने एक चमत्कार किया जब उन्होंने विधवा के मृत पुत्र को जीवन वापस दिया। उन्होंने कर्मेल पर्वत पर भी एक चमत्कार किया ताकि यह दिखा सकें कि बाल एक झूठा देवता था। परमेश्वर होरेब पर्वत पर एलियाह के पास से गुजरे। इसका अर्थ था कि परमेश्वर ने एलिय्याह पर एक विशेष तरीके से अपने आप को प्रकट किया। होरेब पर्वत सीनै पर्वत का दूसरा नाम था। परमेश्वर कई वर्षों पहले सीनै पर्वत पर मूसा के पास से गुजरे थे (निर्गमन 33:21 – 34:7)।

एलिय्याह और मूसा दोनों ही भविष्यवक्ता थे जिनका परमेश्वर के साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। एलिय्याह निराश और अकेला महसूस कर रहा था। ऐसा इसलिए था क्योंकि उसे लगा कि वह ही एकमात्र इस्राएली है जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना हुआ है। परमेश्वर ने एलिय्याह को यह कहकर सांत्वना दी कि कई हजार इस्राएली अभी भी परमेश्वर की आराधना करते हैं। परमेश्वर ने उसे एलीशा को सहायक के रूप में भी दिया।